डॉ. ताराशंकर शर्मा (पाण्डेय) की कृतियों में सामाजिक चेतना

प्रस्तौता–प्रियंका शर्मा
शोधार्थी– संस्कृत
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा

मानव–समाज व समस्याएँ दोनों एक दूसरे से घनिष्ट रूप से सम्बन्धित है। जहाँ–जहाँ मानव समाज है। वहाँ–वहाँ समस्याएँ भी है। वे अविच्छिन्न है अतः समाज और समस्याएँ दोनों एक ही सिक्के दो पहलू है। समाज के जन्म के साथ–साथ समस्याऐं भी प्रादूर्भूत होती है जो धीरे–धीरे विकसित होकर बाद में उग्र रूपधारण कर लेती है और उसके चिन्तन, विचार, क्रियाकलापों और कार्य करने के तौर–तरीकों में कुछ इस प्रकार समाहित हो जाती है कि व्यक्ति इन समस्याओं की कठपुतली बनकर रह जाता है। ये समस्याऐं शाश्वत् है क्योंकि प्रत्येक समाज में कुछ ऐसे अवांछनीय व्यक्ति भी होते है जो जानबूझकर, लालचवश, अज्ञानवश अथवा परिस्थितियों के कारण ऐसा व्यवहार कर बैठते है, जो समाज के अन्य लोगों के प्रतिकूल अर्थात् उनके लिए हानिकारक अथवा घातक हो सकता है।

समाज में उत्पन्न ऐसी ही समस्याऐं 'सामाजिक समस्याओं' के नाम से जानी जाती है। मानव समाज कभी भी इन समस्याओं से पूर्णतः मुक्त नहीं रहा, किसी न किसी रूप में समस्याऐं समाज को प्रभावति करती रही है और यह प्रक्रिया आज भी जारी है। विश्व का प्रत्येक राष्ट्र नानाविध भयंकर सामाजिक समस्याओं से त्रस्त है।

भारत में अनेकों सामाजिक समस्याऐं अपना कुप्रभाव दिखाकर उसे अवनति की ओर उन्मुख कर रही है। जो चिन्ता का विषय है। ऐसी परिस्थितियों में भी देश में वर्तमान सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूक रहकर उसके निवारण के लिए यथासामर्थ्य प्रयत्न करना प्रत्येक नागरिक का परम कर्त्तव्य है।

काव्य कवि की मानसिक शक्तियों के विकास की व्याख्या तक ही सीमित नहीं होता, वह इससे भी आगे बढ़ता है। जिस प्रकार वह अपने चतुर्दिक फैली प्रकृति में अपने मनोवेगों का स्पन्दन देखता है। उसी प्रकार अपने चारों और घिरे समाज में वह जीवन के सुख–दुख का इतिहास पढ़ता है। कवि चिन्तन करते–करते ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है। कि उसका जीवन समाज के जीवन का अभिन्न अंग बन जाता है।

नर और नारी एक दूसरे के पूरक हैं। भारतीय समाज में आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत गृहस्थाश्रम की अवस्था ही इसके सर्वथा उपयुक्त है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास इन चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम ही सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि अन्य तीनों आश्रमों की समुचित स्थिति इसी पर निर्भर हैं–

ब्रह्मचारी गृहस्थ श्च वानप्रस्थो यतिस्तथा।
एते गृहस्थप्रभवाश्चत्वारः पृथगाश्रमाः।।
सर्वेषामपि चैतेषां वेदस्मृतिधिधानतः।
गृहस्थ उच्यते श्रेष्ठः स त्रीनेतान् बिभर्ति हि।।[1]

इसी प्रकार जिस समय कवि अपने काव्य की रचना करता है, उस समय में होने वाली घटनाओं, विचारों, भावनाओं, वातावरण की झलक उसके काव्य में अवश्य दिखाई देती है। अतः डॉ. पाण्डेय भी सम्प्रति समाज में व्याप्त निर्धनता, बेरोजगारी, यौतुक प्रथा आदि वर्तमान समय की कई समस्याओं के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील है। उन्होंने अपनी सरस कृति 'सारस्वत सौरभम्' के अन्तर्गत संकलित कविताओं व कथाओं के माध्यम से सहृदय सामाजिकों का ध्यान इन समस्याओं के प्रति आकृष्ट किया है। कोऽयं तस्या अपराधः? किं नामधेयं यौतकम्?, आक्षेपः कस्मिन्?, उदरस्य कृते, आम्रपाली, परिवर्तनम् आदि ऐसी रचनाएँ है जिनमें इन सामाजिक समस्याओं का वर्तमान रूप व उनके दुष्परिणामों को उल्लेखित कर देशवासियों को इनके समूलोन्मूलन के लिए समुत्प्रेरित किया गया है।

अतः सामाजिक समस्या समाज में विद्यमान एक ऐसी कष्टप्रद दशा है जो न केवल व्यक्ति अपितु सम्पूर्ण समाज के लिए हानिकारक होती है, क्योंकि सामाजिक मूल्यों, आदर्शों और नैतिकताओं आदि के प्रतिकूल होती है तथा समाज की उन्नति में बाधक होती है। डॉ. पाण्डेय ने यौतुक प्रथा, स्त्री–पुरुष भेद, बेरोजगारी, निर्धनता, नारी अवमानना आदि सामाजिक समस्याओं का वर्णन किया है।

भारतीय संस्कृति में विवाह को एक आध्यात्मिक कर्म, दो आत्माओं का मिलन, पवित्र धार्मिक संस्कार और मानव जीवन का अनिवार्य अंग माना जाता है। मनु ने तीनों आश्रमों में श्रेष्ठ आश्रम गृहस्थाश्रम को माना है। जिसका आरम्भ

विवाह संस्कार द्वारा होता है। भारतीय संस्कृति में कहा गया है कि स्त्री–पुरुष का पारस्परिक सम्बन्ध तो उनके जन्म लेने से पूर्व ही निश्चित हो जाता है अतः विवाह मानव जीवन को ईश्वर प्रदत्त अनमोल देन है किन्तु वर्तमान समाज में लोगों में निरन्तर बढ़ रही अर्थलोलुपता तथा विलासी प्रवृति ने इस पावन धार्मिक परम्परा को भी कलुषित कर दिया है। इस कुप्रथा के कारण कभी जो नारी देवतातुल्य पूजनीय मानी जाती थी आज धन के लोभ में आकर अनेक अपशब्द संज्ञाओं से अभिहित कर प्रताड़ित की जा रही है। 'यौतुक प्रथा' कौढ़ की तरह समाज में फैलती जा रही है। जिसके भयंकर दुष्परिणाम सामने आ रहे है। कवि प्रश्नानुप्रश्न की शैली में 'दहेज' जैसी विकट समस्या पर व्यंग्यात्मक शैली में प्रश्न उठाते हुए कहते हैं कि–

"किं नामधेयं यौतकम्?
किं नित्योपयोगि वस्तु
गेहे तव पूर्वमस्तु।
नास्ति चेत् कुरु प्रयत्नं
पौरुषं किं ते सपत्नम्?।।"
सत्यम्! तर्हि तव भिक्षः
अथवा कारयाऽऽत्मनोऽपि यौतवम्।
किं नामधेयं यौतकम्?

कवि यहाँ नारी उत्पीड़न से व्यथित होकर समाज के समक्ष अनेक जीवन्त प्रश्नों को उपस्थित कर सामाजिक चेतना जाग्रत करना चाहते है। वे कहते हैं कि नारी का मूल्यांकन उसके गुणों के आधार पर किया जाता है। न कि दहेज से, उनकी दृष्टि में दहेज युक्त किन्तु निर्गुण नारी सर्वथा है। यथा–

"लज्जाऽऽभरण–भूषिता
प्रसन्ना भवेद् भूषिता।
गुरुशुश्रूषाऽऽ–चरणा
कान्तानुसारिचरणा।।
एवं गुणगयग्रथिता नास्ति चेत्
व्यर्थ ते सयौतकं यौवतम्।
किं नामधेयं यौतकम्?"

यौतुक प्रथा पर प्रश्न उठाने वाली 'परकीय धनम्' मुक्तक कविता में कवि ने यौतुक की तुलना राक्षस से की है–**'यौतुकमातुधानैर्विहितदुर्दशं तद्धनं।'**

कवि वर्तमान परिवेश में व्याप्त 'यौतुकप्रथा' के कारण नारी दुर्दशा पर चिन्ता व्यक्त करते हुए 'परकीयधनम्' कविता के माध्यम से समाज को यह सन्देश प्रदान कर जागरुकता उत्पन्न करना चाहते है। कि किसी भी सामाजिक को अपनी पुत्री को परकीय धन के रूप में प्रदान करने से पहले दहेज रूपी राक्षस पर भलीभाँति विचार कर लेना चाहिए तथा अत्यन्त सोच विचारपूर्वक ही कन्या रूपी धन को परकीय धन के रूप में प्रदान करना चाहिए। यथा–

"तत्पुनः
गृहस्थः/सामाजिक प्राणी
परकीयं किन्तु ममत्वेन नैजं
यौतुकयातुधानैर्विहितदुर्दश तत्रृनं
विलोक्य तादृशं दुःखमनुभवति
यस्यानुमानं तु ज्ञानी कण्वोऽपि कर्तुं नैव पारयति स्म।
परन्तु सावधानमनसो भवन्तु ते
ममत्वप्रदातृ परकीयं धनं।।"

समाज में बढ़ती हुई विसंगतियों को उठाते हुए समाज में स्त्री की दुर्दशा को देखकर कवि हृदय पुकारता है कि 'कोऽयं तस्या अपराधः।' हमारे समाज में यदि आज भी किसी नववधू के गर्भ से निरन्तर ही कन्या संतति उत्पन्न होती है

तो उसका घर एवं समाज में तिरस्कार होता है यहाँ तक कि उसे अनगिनत यातनाएँ दी जाती है। अतः कवि समाज के इस अपराध से दुःखित होते हुए समाज से प्रश्न करता है कि इसमें उसका क्या अपराध है–

"पुत्रं यदि सा न सूते
बालिकाततिं×च तनुते।
भाग्याधीना किं कुरुते
तदपि सापराधां मनुषे।।
तदा त्यर्थ तवाक्षेपः, मार्गो नियतेरबाधः।
कोऽयं तस्या अपराधः?"

स्त्री–पुरुष के भेद के कारण वर्तमान में मनुष्य शिक्षित होते हुए भी अपने आपको कन्या–भ्रूण हत्या रूपी पाप के दलदल में धकेलता जा रहा है इस तरह के कुकृत्य ने सम्पूर्ण मानव जाति को कलंकित कर दिया है। ऐसा कलंक जो मानव के दुष्कृत्यों तथा अन्याय की पराकाष्ठा का सूचक है। कन्या भ्रूण हत्या के लिये भी 'दहेज प्रथा' जैसी सामान्य बुराई को उत्तरदायी माना जा सकता है। क्योंकि गरीब माता–पिता दहेज देने के भय से कन्या के जन्म को अपशकुन समझने लगते है और उन्हें जन्म के पूर्व ही कोख में ही समाप्त कर दिया जाता है।

नारी होने के बाद ही उसे सौभाग्य अर्थात् स्वस्थ पति का साहचर्य प्राप्त होता है और वह 'पत्नी' पद प्राप्त करती है। यह पत्नी यदि पुरुष के साथ कदम से कदम मिलाते हुए दोनों ही सहधर्मिता बनाये रखे तो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप समस्त पुरुषार्थ चतुष्टयी का फल सहज सुलभ हो जाता है, अत एव पुरुष का घर पत्नी से ही होता है–

पत्नीमूलं गृहं पुंसां यदिच्छन्दानुवर्तिनी।
तया धर्मार्थकामानां त्रिवर्गफलमश्नुते।।[2]

स्कन्दपुराण में भी मिलता है जिसमें गृहस्थ के सम्पूर्ण सुख का आधार भार्या को बतलाया गया है–

भार्या मूलं गृहस्थस्य भार्या मूलं सुखस्य च।
भार्या धर्मफलावाप्त्यै भार्या सन्तानवृद्धये।।[3]

जन्मदाता और पालनकर्ता जनक और पिता श्रेष्ठ है, परन्तु अन्नदाता पिता उससे भी श्रेष्ठ है, इन सबसे सौ गुना श्रेष्ठ माता है क्योंकि वह गर्भधारण करने के साथ ही पोषण भी करती है–

जनको जन्मदातृत्वात् पालनाच्च पिता स्मृतः।
गरीयान् जन्मदातुश्च योऽन्नदाता पिता मुने।।
तयोः शतगुणे माता पूज्या मान्या च वन्दिता।
गर्भधारणपोषाभ्यां सा च ताभ्यां गरीयसी।।[4]

समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर अपने पति के साथ पोते–पोतियों और नाते–नातियों के साथ आनन्दपूर्वक समय व्यतीत करती हुई नारी धन्य है–

क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।[5]

नारी स्वभाव से सहनशील होती है। आरम्भ में वह ही प्रसव पीड़ा को सहन करती है। अन्त में भी अपने ऊपर अत्याचारों को सहन करती है। इसी भाव से व्यथित डॉ. पाण्डेय ने कहा है कि ग्राम से नगर तक नारी के प्रति जो सम्मान और आदर्श होना चाहिए वह उसे सुलभ नहीं है। पुत्र देने वाली नारी का सम्मान है और कन्या सन्तान वाली का अपमान है यह विसंगति समाज के लिए कोढ़ है। सभ्य समाज भी इस कदाचरण से अछूता नहीं है। अतः कवि ने एक ओर जहाँ समाज में नारी की अवमानना का चित्रण किया है तो दूसरी ओर कन्या संतति भी पुत्र के समान ही कल्याणकारी है यह कहकर पुत्र व पुत्री दोनों को समान समझने का संदेश प्रदान कर समाज में जागरुकता लाने का प्रयास किया है यथा–

"अग्रिमा नास्ति किमद्य नारी
नर एवं किं कल्याणकारी।
बालिकापि धत्ते पुत्रसाम्यं
मोदस्व तवेदं महद्भाग्यम्।।"

स्त्री–पुरुष को समान समझने का सन्देश प्रदान कर अंत में कवि ने राष्ट्रहित में 'परिवारकल्याण' सीमित परिवार को अपनाने का सन्देश प्रदान करते हुए कहा है कि–

"तत्स्वीकुरु निरोधम्, क्व वा रोधः विधेरब्धिरगाधः।
कोऽयं तस्या अपराधः?"[6]

डॉ. ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय' ने न केवल मुक्तक कविताओं के माध्यम से अपितु कथा के माध्यम से भी सामाजिकता का चित्रण कर विविध समस्याओं को जीवन्त रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। 'आम्रपाली' कथा का उद्धेश्य कवि की दृष्टि में समाज में नारी के महत्त्व को स्थापित करते हुए गोरवान्वित करना है। समाज में होने वाले आम्रपाली के अपमान से डॉ. पाण्डेय ने सामान्य नारी की दुर्दशा का चित्रण किया है। सभा में होने वाले आम्रपाली के प्रति निर्णय को सुनकर लेखक का हृदय व्यथित हो जाता है तथा अपने हृदय की आह से वे समाज पर अत्यन्त तीक्ष्ण कटाक्ष करते हैं–

"किदृगश्लीलोऽसामाजिकोऽधार्मिकश्च निर्णयः। स्वयं राष्ट्ररक्षकैरबलैका निरपराधापि नगरवधूर्निर्मापिता, यस्या गुणो दुष्धातोरिव दोषाय कल्पितः।"

प्राचीनकाल में निरपराध होते हुए भी अबला नारी पर जो अत्याचार किए जाते थे वे आज भी शिक्षित समाज में उसी रूप में बने हुए है अतः समाज की इस अवस्था से दुःखित होकर डॉ. पाण्डेय नारी दशा के उत्थान के लिए समाज को जागरूक बनाना चाहते है। 'आम्रपाली नगरवधू होते हुए भी राष्ट्र सम्पदा थी' इस वक्तव्य के माध्यम से लेखक ने सामाजिक दृष्टि व नायिका के व्यक्तित्व को नए प्रतिमान दिए है। साथ ही समाज में नारी की महत्ता को गौरवान्वित कर समाज में नारी उत्थान के प्रति चेतना जागृत करते हुए समाज में स्त्री के प्रति जो पूजनीय भाव होना चाहिए उसे सत्य रूप में प्रतिष्ठापित किया है।

नारी उत्थान के प्रति अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को चेतना प्रदान करने के पश्चात डॉ. पाण्डेय ने समाज में अपने पैर मजबूती से जमाने वाली अन्य समस्याओं के विषय में भी पाठकों को अवगत कराते हुए सामाजिकों को जाग्रत करने का प्रयास किया है। 'परिवर्तनम्' कथा के द्वारा प्रो. पाण्डेय ने वर्तमान सामाजिक परिवेश की सत्यता को अतिसहजता के साथ यथार्थ रूप में चित्रित किया है। नई पीढ़ी आज भी हमारे समाज में अपने बुजुर्गों की उपेक्षा कर रही है, यह बुराई समाज में दिनोंदिन बढ़ती जा रही है जो अत्यधिक निन्दनीय है। जबकि हमारा समाज प्रारम्भकाल से ही वृद्धोपसेविनी रहा है जैसा कि मनुस्मृति में महाराज मनु ने लिखा है कि–

"अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलं।।"[7]

डॉ. पाण्डेय नवीन पीढ़ी में पुनः इसी भाव को जाग्रत करना चाहते है तथा समाज में वृद्धों को पुनः उसी प्रतिष्ठित पद पर देखना चाहते है जिसकी सत्यता मनु ने प्रतिपादित की है। अतः वर्तमान पीढ़ी को वृद्धों की सेवा के प्रति जागरुक होना चाहिए। समाज में व्याप्त बेरोजगारी जैसी विकराल समस्या के प्रति भी डॉ. पाण्डेय ने समाज को चेतनता प्रदान करने का प्रयास करते हुए 'आक्षेपः कस्मिन्?' कविता के माध्यम से व्यंग्यात्मक शैली में प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। भारत में बेरोजगारी की समस्या अपनी चरम सीमा पर है। भारत जैसे समृद्ध राष्ट्र में आज भी बेरोजगारी रूपी पिशाच मजबूती से अपनी जड़े जमाय हुए है यद्यपि सरकार द्वारा बेरोजगारी उन्मूलन हेतु कई योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है तथापि यह समस्या अभी भी विकट रूप में विद्यमान है। बेरोजगारी जैसी विकाराल समस्या से जूझते हुए नवयुवक के अन्तर्द्वन्द्व को परिभाषित करते हुए डॉ. पाण्डेय कहते है कि अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति किए बिना गृहस्थ का सम्मान भी शेष नहीं रह पाता, व्यक्ति हरपल आजीविका की तलाश में भटकता रहता है। किसे बुरा कहे या किस पर आरोप मढ़े यथा–

"विवशः सः,
गृहे पत्न्या परिभाषणापेक्षया,
अधिकारिणः प्रलाप श्रोतुम्।
पश्यति गृहे दर्पणे, यत्र विलोक्यते
विलपन् पृथुकः, दुग्धबिन्दुप्राप्त्यै।
न कदाचिदपि मिलति
निजस्य नियतकर्मणः

आक्षेपः कस्मिन्
कार्यालये
अथवा पृथुकः?"[8]

यहाँ भी कवि अन्त में प्रश्न उपस्थित करते हुए इस सामाजिक समस्या के प्रति लोगों में चेतनता उत्पन्न करना चाहते है।

बेरोजगारी के कारण गरीबी व अमीरी के बीच की दूरी ओर अधिक बढ़ती जा रही है। लक्ष्मी निर्धनों का उपहास करती हुई धनिकों के पास संचित होती जा रही है जिससे उच्च व निम्न वर्ग में और अधिक अन्तराल आता जा रहा है। जो सामाजिक विसंगतियों का प्रधान कारण है। क्योंकि समाज में अर्थ की प्रधानता को कौन नहीं जानता? आज का युग अर्थप्रधान युग है सभी अर्थातुर है तथा जिसके पास धन है वही व्यक्ति गुणवान् व विद्वान् है। जैसा कि नीतिशतक में भर्तृहरि ने भी कहा है कि–

"यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः,
स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः,
सर्वे गुणाः का×चनमाश्रयन्ते।।"[9]

लक्ष्मी अपनी विपरीत प्रकृति के कारण धनिकों के पास ही संचित हो रही है तथा निर्धन वर्ग विविध समस्याओं से जूझने पर भी निर्धन ही बने हुए है। इससे समाज में जो अन्तराल आ रहा है वह राष्ट्र की सामाजिक दशा के लि अभिशाप है। अतः यहाँ कवि ने 'अन्तरालः' कविता के माध्यम से लक्ष्मी की विपरीत प्रवृत्ति का वर्णन करते हुए समाज में व्याप्त निम्न वर्ग की दयनीय दशा का चित्रण किया है साथ ही लोगों को इस समस्या के प्रति जागरूक किया है। यथा–

"फलतो लक्ष्मीः
दरिद्राणां प्रसन्नतां विलोक्य
तद्भाग्योपरि हसन्ती
धनिकानामन्धकारपूर्णेषु तलगृहेषु संस्थाय
धनिकतादरिद्रतान्तरालं गभीरीकरोति।"

अन्ततः हम कह सकते हैं कि डॉ. पाण्डेय ने 'सरस्वतसौरभम्' में वर्तमान समाज में व्याप्त विविध समसामयिक समस्याओं यथा यौतुक प्रथा, स्त्री–पुरुष भेद, बेरोजगारी, नारी उत्पीड़न, उच्च व निम्न वर्ग के बीच बढ़ता अन्तराल आदि को अपनी लेखनी का आधार बनाकर उन समस्याओं के प्रति लोगों में चेतनता उत्पन्न करने का प्रयास किया है। विविध सामाजिक समस्याओं की वेदनाओं से त्रस्त कवि ने सामाजिकों के समक्ष अनेक जीवन्त प्रश्नों को प्रस्तुत किया है। जो अनुत्तरित है, जिनके द्वारा लेखक समाज में जागृति उत्पन्न करना चाहते है तथा भारतीय समाज को एक आदर्श समाज के रूप में स्थापित करना चाहते है। लेखक ने सामाजिकों के समक्ष जो प्रश्न उपस्थित किए है वे अनुत्तरित है, बौद्धिक चेतना ही इस जागरण को मूर्त्त रूप दे सकती है।

♦ ♦ ♦ ♦

संदर्भ सूची

1. मनु स्मृति, पृ.सं. 6/87/89
2. दक्षस्मृति
3. काशीखण्ड, 4/67
4. ब्रह्मवैवर्तपु., पृ.–40
5. ऋग्वेद, 10/85/42
6. सारस्वतसौरभम्, पृ.–36
7. मनुस्मृति
8. सारस्वतसौरभम्, पृ.–37
9. नीतिशतक